Crop Weather Watch Group Advisory

U.P. Council of Agricultural Research, Lucknow

फसल मौसम सतर्कता समूह (क्राप वेदर वॉच ग्रुप) की सातवीं बैठक की संस्तुतियाँ

दिनॉक : 18 जून, 2015
समय : 11.00 बजे
स्थान : उपकार सभाकक्ष

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2015–16 की सातवीं बैठक प्रो. राजेन्द्र कुमार, महानिदेशक उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 18 जून, 2015 को उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में च.शे.आ. कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम एवं फसल वैज्ञानिकय न.दे. कृषि, प्रौ. विश्वविद्यालय, कुमारगंज, फैजाबाद के मौसम वैज्ञानिक एवं पूर्व धान प्रजनकय कृषि विभाग, उद्यान विभाग, गन्ना विभाग, पशुपालन विभाग, रेशम विभाग, मत्स्य विभाग, रिमोट सेंसिंग एप्लिकेशन सेंटर, लखनऊ एवं परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान एवं उपग्रह से प्राप्त चित्रों के विश्लेषण के अनुसार (दिनांक 17 जून से 23 जून, 2015 तक) प्रदेश के सभी क्षेत्रों में हल्के से मध्यम बादल 19 जून तक तथा दिनांक 20 एवं 21 जून में मध्यम से घने बादल छाये रहने की सम्भावनाओं के साथ प्रदेश के तराई क्षेत्रों में मध्यम एवं कहीं–कहीं पर भारी वर्षा तथा प्रदेश के शेष क्षेत्रों में हल्की से मध्यम वर्षा स्थानीय स्तर पर होने के आसार है। प्रदेश के मध्य एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश में पूर्वी एवं उत्तर पूर्वी, बुंदेलखण्ड एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश में दक्षिणी–पश्चिमी एवं उत्तर पश्चिमी हवाएँ 12–15 किमी. प्रति घण्टे की औसत गति से चलने की सम्भावना है जिससे स्थानीय स्तर पर गरज–चमक के साथ हल्की बूँदाबाँदी प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में सप्ताह के अंतिम दो दिनों में होने की सम्भावना है। इस सप्ताह के प्रारम्भिक तीन दिनों में प्रदेश के मध्य उत्तर प्रदेश, बुंदेलखण्ड एवं पश्चिमी क्षेत्रों में अधिकतम तापमान 40–42 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 26–28 डिग्री सेल्सियस रहने की सम्भावना है जो सामान्य से 2–3 डिग्री सेल्सियस अधिक है। प्रदेश में सप्ताह के अंतिम दिनों (21 एवं 22 जून) में मध्यम से घनी बदली की मौजूदगी के कारण दिन का तापक्रम 36–38 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 27–29 डिग्री सेल्सियस के मध्य रहने की सम्भावना है जो सामान्य के आसपास है। अधिकतम सापेक्षिक आर्द्रता सप्ताह के प्रथम चार दिनों में 50–60 प्रतिशत एवं न्यूनतम आर्द्रता का प्रतिशत प्रदेश के अधिकांश क्षेत्रों में 35–45 प्रतिशत तथा सप्ताह के शेष दिनों में अधिकतम आर्द्रता बादलों एवं वर्षा से आच्छादित जनपदों में 75–85 प्रतिशत एवं न्यूनतम आर्द्रता 50–60 प्रतिशत रहने की सम्भावना है। इस सप्ताह अगले 2–3 दिनों तक उमस भरी गर्म हवाओं में बदलाव की कोई सम्भावना नहीं है। कुल मिलाकर इस सप्ताह मौसम शुष्क रहेगा।

दक्षिण–पश्चिमी मानसून सक्रिय होकर वातावरण के ऊपरी सतह की हवा चक्रवाती परिसंचरण के माध्यम से उड़ीसा, बंगाल की खाड़ी से होता हुआ कलकत्ता तक सक्रिय है। बंगाल की खाड़ी में पुनः कम वायुदाब का क्षेत्र 18 जून को विकसित हुआ है जिससे 2–3 दिनों के मध्य मानसून के आगे बढ़कर छत्तीसगढ़ तक पहुँचने के आसार हैं।

कृषि विभाग, उ.प्र. द्वारा दिये गये आच्छादन आंकड़ों के अनुसार दिनांक 14 जून, 2015 तक प्रदेश में कुल धान की नर्सरी का आच्छादन लक्ष्य 4.03 लाख हे. के सापेक्ष 1.85 लाख हे. हो चुका है जो लक्ष्य का मात्र 45.98 प्रतिशत है। धान का आच्छादन लक्ष्य 60.45 लाख हे. के सापेक्ष रोपाई की प्रतिपूर्ति 0.81 लाख हे. में हुई है जो लक्ष्य का 1.34 प्रतिशत है, जबकि पिछले वर्ष इस अवधि तक 0.97 लाख हे. में रोपाई हो चुकी थी। वर्षा के अभाव में अभी तक 0.16 लाख हे. में रोपाई इस वर्ष कम हो सकी है। खरीफ की अन्य फसल मक्का के 7. 74 लाख आच्छादन लक्ष्य के सापेक्ष केवल 0.87 लाख हे. में बुआई की पूर्ति हो सकी है जो लक्ष्य का 11.33 प्रतिशत है। दहलनी फसल की मुख्य फसल अरहर की बुआई 3.59 लाख हे. के सापेक्ष 0.34 लाख हे. में ही अभी तक हो सकी है जो कि लक्ष्य का 9.61 प्रतिशत है। ज्वार की बुआई निर्धारित लक्ष्य 1.80 लाख हे. के सापेक्ष 0.20 लाख हे. में हुई है जो लक्ष्य का 1.38 प्रतिशत है।

अतः प्रदेश में फसल एवं मौसम के इस परिप्रेक्ष्य में किसानों को निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैंः–

- नर्सरी डालने के लिए शोधित बीज का ही प्रयोग करें। यदि बीज पूर्व शोधित न हो तो धान की नर्सरी डालने से पूर्व बीज शोधन सुनिश्चित करें।
- जहाँ तक सम्भव हो ड्रमसीडर या जीरो–टिल–फर्टी–ड्रिल से ही बुआई करें।
- नर्सरी में पानी का तापमान बढ़ने पर क्यारी से पानी निकाल कर पुनः सिंचाई करें। सिंचाई यथासंभव सायंकाल ही करें।
- मौसम के पूर्वानुमान एवं संसाधनों के दृष्टिगत कम एवं मध्यम अवधि की प्रजातियों को वरीयता दी जाय तथा धान की नर्सरी 5–7 दिन के अन्तराल पर तैयार की जाय।
- सीमित संसाधन होने के बावजूद कृषक फास्फेटिक उर्वरक व जैविक खादों का प्रयोग अवश्य करें ताकि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी फसल को हानि कम से कम हो।
- स्री पद्धति से 1 हे. रोपाई हेतु मात्र 1000 वर्ग फुट क्षेत्रफल की पौध पर्याप्त है तथा नर्सरी की क्यारियॉं 4–5 इंच ऊँची हों। स्री पद्धति के लिये 6 किग्रा. प्रति हे. की दर से बीज की नर्सरी में बुआई करें। स्री पद्धति की नर्सरी में जहाँ तक संभव हो देशी खाद का ही प्रयोग करें।
- मौसम सम्बन्धी पूर्वानुमान के दृष्टिगत किसान बाजरा, रागी, तिल, उर्द, मूँग के बीज की व्यवस्था रखें।
- मौसम की निर्भरता को देखते हुए कृषकों से अनुरोध है कि अपनी फसलों का बीमा अपने नजदीकी सहकारी या व्यावसायिक बैंकों के माध्यम से अवश्य करायें। खरीफ 2015 के लिए फसलों के बीमा कराने की अवधि संशोधित राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना में 1 अप्रैल से 31 जुलाई व मौसम आधारित फसल बीमा योजना में 1 अप्रैल से 30 जून, 2015 तक है। इन योजनाओं के अंतर्गत जिन किसानों के किसान क्रेडिट कार्ड चालू हैं वे अपनी फसलों का बीमा सम्बन्धित बैंक कर्मचारियों से करा लें।
- कृषि विभाग द्वारा चलायी जा रही पारदर्शी किसान योजना के अंतर्गत कृषि निवेश, कृषि यंत्र, बीज, कृषि रसायनों को प्राप्त करने हेतु अपना रजिस्ट्रेशन कराएँ। किसान कृषि विभाग की वेबसाइट www.upagriculture.com पर ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं।

Crop Weather Watch Group Advisory

U.P. Council of Agricultural Research, Lucknow

धान की खेती

- यदि जीवाणु झुलसा या जीवाणुधारी रोग की समस्या हो तो 25 किग्रा0 बीज के लिए 4 ग्राम स्टेप्टोमाइसीन सल्फेट या 40 ग्राम प्लान्टोमाइसीन को पानी में मिलाकर रात भर भिगो दें। दूसरे दिन छाया में सुखाकर नर्सरी डालें।
- जिन क्षेत्रों में शाकाणु झुलसा की समस्या है तथा बीज शोधित न हो, ऐसी दशा में उनमें 25 किग्रा0 बीज को रातभर पानी में भिगोने के बाद दूसरे दिन अतिरिक्त पानी निकाल देने के बाद 75 ग्राम थीरम या 50 ग्राम कार्बेन्डाजिम को 8–10 लीटर पानी में घोलकर बीज में मिला दिया जाये इसके बाद छाया में अंकुरित करके नर्सरी डाली जायें।
- उन क्षेत्रों में जहां खेत में पानी 50 से 100 सेमी. तक कम से कम 30 दिन भरा रहता है रोपाई हेतु जल लहरी एवं जलप्रिया की नर्सरी यथाशीघ्र डालें।
- सामयिक बाढ़ वाले क्षेत्रों हेतु बाढ़ अवरोधी, स्वर्णा सब–1 तथा कम जल भराव वाले क्षेत्रों हेतु जल लहरी एवं एन.डी.आर.–8002 प्रजातियों की नर्सरी डालें।
- धान की मध्यम अवधि वाली प्रजातियां यथा नरेन्द्र धान–359, मालवीय धान–36, मालवीय धान–1, नरेन्द्र धान–2064, नरेन्द्र धान–2065, नरेन्द्र धान–2026 नरेन्द्र धान–3112–1 आदि की नर्सरी डालें।
- संकर धान की प्रजातियों यथा एराइज–6444, 6201, जे.के.आर.एच.–401 (ऊसर हेतु भी संस्तुत) पी.एच.बी.–71, नरेन्द्र संकर धान–2,3, के.आर.एच.–2, पी.आर.एच.–10, यू.एस.–312, पूसा आर.एच.–10, वी.एस.आर.–202, आर.एच.–1531 आदि की नर्सरी डालें।
- सुगंधित धान की प्रजातियों टाइप–3, कस्तूरी, पूसा बासमती–1, हरियाणा बासमती–1, बासमती–370, तारावडी बासमती, मालवीय सुगंध, मालवीय सुगंध 4–3, वल्लभ बासमती–22, नरेन्द्र लालमती, नरेन्द्र सुगंध आदि की नर्सरी डालें।
- नर्सरी लगाने के 20 दिन के अन्दर एक छिड़काव ट्राइकोडर्मा का करें।
- बीज शोधन हेतु 5 ग्राम प्रति किग्रा. बीज की दर से ट्राइकोडर्मा का प्रयोग किया जाये।
- खैरा रोग जिंक की कमी के कारण नर्सरी में लगता है। इस रोग में पत्तियॉ पीली पड़ जाती हैं जिस पर बाद में कत्थई रंग के धब्बे बन जाते हैं। खैरा रोग के नियन्त्रण हेतु 5 किग्रा. जिंक सल्फेट को 20 किग्रा. यूरिया अथवा 2.50 किग्रा. बुझे हुए चूने को प्रति हे. लगभग 1000 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- सफेदा रोग लौह तत्व की कमी के कारण नर्सरी में लगता है। इस रोग में नई पत्ती कागज के समान सफेद रंग की निकलती है। सफेदा रोग के नियन्त्रण हेतु 5 किग्रा. फेरस सल्फेट को 20 किग्रा. यूरिया अथवा 2.50 किग्रा. बुझे हुए चूने को प्रति हे. लगभग 1000 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।

मक्का की खेती

- अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए मक्का की देर से पकने वाली संकर प्रजातियों गंगा–11, सरताज, एच.क्यू.पी.एम.–5, प्रो–316 (4640), बायो–9681, वाई–1402, एच.क्यू.पी.एम.–8 तथा संकुल किस्म प्रभात की बुआई यथाशीघ्र समाप्त करें। मध्यम अवधि की संकर प्रजातियों यथा–दकन–107, मालवीय संकर मक्का–2, वाई.–1402 के, प्रो–303 (3461), केएच–9451, केएच–510, एमएमएच–69, बायो–9637, बायो–9682 एवं संकुल प्रजातियों नवजोत, पूसा कम्पोजिट–2, श्वेता सफेद, नवीन की बुवाई करें।
- यदि बीज शोधित न हो तो बीज बोने से पूर्व 1 किग्रा. बीज को 2.5 ग्रा. थीरम से शोधित करना चाहिये या बीज को इमिडाक्लोप्रिड 2 ग्रा./किग्रा. से बीज को शोधित करना चाहिए।

सावां की खेती

- सावां की संस्तुत प्रजातियों यथा टी–46, आई.पी.–149, यू.पी.टी.–8, आई.पी.एम.–97, आई.पी.एम.–100, आई.पी.एम.–148 व आई.पी.एम.–151 के बीज की व्यवस्था करें।

कोदों की खेती

- कोदों की संस्तुत प्रजातियों जे.के.–6, जे.के.–62, जे.के.–2, ए.पी.के.–1, जी.पी.वी.के.–3 के बीज की व्यवस्था करें।

ज्वार की खेती

- ज्वार की संस्तुत प्रजातियों यथा वर्षा, सी.एस.वी.–13, सी.एस.वी.–15, एस.पी.बी.–1338 (बुन्देला), विजेता तथा संकर प्रजातियों की सी.एस.एच.–16, सी.एस.एच.–9, सी.एस.एच.–14, सी.एस.एच.–18, सी.एस.एच.–13 व सी.एस.एच.–23 के बीज की व्यवस्था करें ताकि जून के अंतिम सप्ताह में इसकी बुवाई की जा सके।

अरहर की खेती

- सिंचित क्षेत्रों में पश्चिमी उ.प्र. हेतु अरहर की अगेती संस्तुत प्रजाति पारस तथा सम्पूर्ण उ.प्र. हेतु संस्तुत प्रजातियों यू.पी.ए.एस.–120, टा–21, आई.सी.पी.एल.–151 तथा पूसा–992 की बुवाई यथाशीघ्र समाप्त करें।
- बुआई से पूर्व यदि बीज शोधित न हो तो एक किग्रा. बीज को 2 ग्रा. थीरम, एक ग्राम कार्बेन्डाजिम अथवा 4 ग्राम ट्राईकोडर्मा+1 ग्राम कारबाक्सिन से उपचारित करें। बुआई से पहले हर बीज को अरहर के विशिष्ट राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें।

गन्ना की खेती

- गन्ने में 15–20 दिन के अन्तराल पर सिंचाई कर नमी बनाये रखें तथा खरपतवार नियंत्रण हेतु आवश्यकतानुसार गुड़ाई करें।
- गन्ने में जल संरक्षण हेतु गन्ने की पत्तियों का मल्च प्रयोग करें।
- फरवरी, मार्च में बोये गन्ने में यदि अभी तक टापड्रेसिंग नहीं की गयी है तो सिंचाई उपरान्त 50 किग्रा. नत्रजन/हे. (110 किग्रा. यूरिया) की

दर से जड़ के पास टॉपड्रेसिंग करें तथा गुड़ाई करें।

- यूरिया छिड़काव से गन्ने की फसल से भरपूर लाभ उठाने हेतु 2 प्रतिशत यूरिया पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- पायरीला का प्रकोप होने पर तथा परजीवी (इपीरिकेनिया मेलानोल्यूका) न पाये जाने की स्थिति में इण्डोसल्फान 35 प्रतिशत घोल 0.67 ली. प्रति हे. अथवा क्वीनालफास 25 प्रतिशत घोल 0.80 ली. प्रति हे. 625 ली. पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

बागवानी

- फलों के नये बाग लगाने के लिये उपयुक्त खेत का चयन एवं रेखांकन कर गड्ढों की खुदाई कर गड्ढे में खाद–उर्वरक की उपयुक्त मात्रा तथा नीम की खली व मिट्टी की समान मात्रा मिलाकर जमीन से लगभग 1 फीट ऊँचा भराई करें।
- आम के बागों में फल मक्खी की संख्या जानने एवं उसके नियंत्रण हेतु कार्बरिल 0.2 प्रतिशत+प्रोटीन हाइड्रोलाइसेट या सीरा 0.1 प्रतिशत अथवा मिथाइल यूजीनाल 0.1 प्रतिशत+मैलाथियान 0.1 प्रतिशत के घोल को डिब्बों में डालकर पेड़ों पर ट्रैप लगायें।
- आम के परिपक्व फलों की तुड़ाई 8–10 मिमी. लम्बी डंठल के साथ करें, जिससे फलों पर चेप न लगने पाये। इससे स्टेम इण्ड रॉट बीमारी नहीं लगती, पकने पर फल दाग रहित आकर्षक होते हैं तथा भण्डारण क्षमता 2–3 दिन बढ़ जाती है। तुड़ाई के समय फलों को चोट व खरोच न लगने दें तथा मिट्टी के सम्पर्क से बचायें।
- फलों की तुड़ाई के लिए उपोष्ण बागवानी संस्थान द्वारा विकसित तुड़ाई यंत्र उपयुक्त है जिससे प्रति घण्टे 800–1000 फल तोड़े जा सकते है। यह यंत्र संस्थान में उचित मूल्य पर उपलब्ध है।
- पौध प्रवर्धन हेतु आम में ग्राफ्टिंग का कार्य करें।

सब्जियों की खेती

- खरीफ सब्जियों यथा बैंगन, मिर्च एवं फूलगोभी की अगेती किस्मों की नर्सरी में बुआई करें।
- भिण्डी व लोबिया की बुआई करें।
- सब्जियों में यथासम्भव जैव नाशिजीवियों का ही प्रयोग करें।
- सब्जियों में आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें।
- हल्दी एवं अदरक की बुवाई जून में समाप्त करें।
- वर्षाकालीन सब्जियों यथा लौकी, तोरई, काशीफल व टिण्डा की बुआई करें।
- कद्दूवर्गीय सब्जियों की बुवाई करें।

पशुपालन

- बड़े पशुओं में गला घोटू बीमारी की रोकथाम हेतु एच.एस. वैक्सीन से तथा लंगड़िया बुखार की रोकथाम हेतु वी.क्यू. वैक्सीन से टीकाकरण करायें। यह सुविधा सभी पशु चिकित्सालय पर उपलब्ध है।
- पशुओं को लू से बचाने के लिए दोपहर में छायादार स्थान पर बॉधें तथा सुबह एवं सायंकाल में ही चराई करायें।
- पशुओं को पर्याप्त मात्रा में साफ पानी पिलायें।
- दुहान से पहले पशुओं को सुबह–शाम ताजे पानी से नहलायें और खरहरा करें जिससे पशुओं में दूध उत्पादन कम न हो।
- जायद चारा फसलों में सिंचाई करते रहें जिससे कि फसल की बढ़वार प्रभावित न होने पाये। पशुओं को हरा चारा अवश्य खिलायें।
- पशुओं को मुरझाया हुआ हरा चारा (विशेष रूप से ज्वार) ना खिलायें क्योंकि इसमें एच.सी.एन. तत्व (जहरीला तत्व) की अधिकता से पशु बीमार हो सकते हैं।
- वर्तमान मौसम में तापमान अधिक होने के कारण पशुओं में डिहाइड्रेशन की समस्या हो सकती हैं। इससे बचाव हेतु पशुओं को खनिज–लवण मिक्चर खिलायें।
- खरीफ चारा फसल की बुवाई हेतु ज्वार, लोबिया,मक्का,ग्वार के बीज की व्यवस्था करें। ज्वार एवं लोबिया के प्रमाणित बीज विभागीय संस्थाओं पर उपलब्ध है।

मत्स्य पालन

- तालाब निर्माण का उपयुक्त समय है जो किसान नये तालाब बनाना चाहते हों या अपने तालाब का सुधार कार्य कराना चाहते है वे यथाशीघ्र निर्माण कार्य पूरा करा लें तथा आगामी मौसम में मत्स्य पालन की तैयारी करें।
- जिन मत्स्य पालकों के तालाबों में अवांछनीय मत्स्य प्रजातियां पाई जा रही है उनमें बार–बार जाल चलाकर मछलियों को निकाल लें एवं तालाब को गर्मी में सुखाने के पश्चात आगामी मौसम में मत्स्य पालन करें।
- ऐसे तालाब जिनमें पानी सूखने की सम्भावना नहीं है, उनमें अवांछनीय मछलियों के नियंत्रण हेतु 25 कु./हे. की दर से 1 मीटर गहरे तालाब में महुआ की खली डाल दें। 24 घंटे में मछलियॉ सतह पर आ जाएंगी। इन्हें बेच दें। महुआ की खली डालने के 15 दिन बाद तालाब तैयार हो जाएगा।
- मत्स्य बीज उत्पादक अपने ब्रूड फिश को पूरक आहार शरीर भार के दो प्रतिशत की दर से प्रतिदिन खिलायें साथ ही साथ विटामिन–ई युक्त आहार भी दें। नर मादा को यदि अभी तक अलग–अलग तालाबों में नहीं किया है तो शीघ्र कर लें।
- कतला, रोहू एवं नैन प्रजातियों में मेच्योरिटी आ गई है। तालाब का जलस्तर 5 से 6 फुट बनाये रखें। जिन मत्स्य बीज उत्पादकों ने अभी तक नर्सरियों को तैयार नहीं किया है वे शीघ्र नर्सरियों को तैयार कर लें।
- कतला, रोहू, नैन प्रजातियों का उत्प्रेरित प्रजनन का समय आ गया है। हैचरी स्वामी मानसून के आगमन संबंधी पूर्वानुमान पर विशेष ध्यान

दें। 20 जून से कतला, रोहू, नैन मत्स्य प्रजातियों का उत्प्रेरित प्रजनन करायें साथ ही आवश्यकतानुसार सिल्वर कार्प एवं ग्रास कार्प मत्स्य प्रजातियों का उत्प्रेरित प्रजनन भी करायें।

- निजी क्षेत्र की कुछ हैचरियों पर उत्प्रेरित प्रजनन के मध्यम से मत्स्य बीज का उत्पादन प्रारम्भ कर दिया गया है। इच्छुक मत्स्य पालक अपने तालाबों में मत्स्य बीज का संचय करायें।
- जो भी मत्स्य पालक मत्स्य बीज उत्पादन की प्रक्रिया से जुड़े हैं वे अपनी नर्सरी की तैयारी कर लें।
- पूरे प्रदेश में जल संसाधन विभाग द्वारा तालाब को गहरा कराये जाने की योजना चलाई जा रही है। ग्रामसभा के तालाब जो पट्टे पर हैं तथा कम गहराई के हैं उन्हें गहरा कराने के लिए जिलाधिकारी को आवेदन करें।
- थाई मॉगुर मछली पालना प्रतिबन्धित है। इसको न पाला जाये।

रेशम पालन

- टसर बीजागारों में संरक्षित कोयों में प्यूपा को जीवित रखने के लिए ठण्ड बनाये रखें।
- सिंचित क्षेत्र में शहतूत पौधों की तथा शहतूत/अर्जुन की नर्सरी की नियमित सिंचाई करते रहें।
- असिंचित क्षेत्र में शहतूत/अर्जुन पौधों के चारों तरफ मिट्टी की गुड़ाई कर नमीं संरक्षित रखने का प्रयास करें।
- रेशम फार्मों की सुरक्षा हेतु बबूल की हेज तैयार करने हेतु फार्मों के चारों तरफ खाई में बबूल बीज की बुवाई करें।
- शहतूती रेशम फार्मों में ट्रीमिंग करके प्रूनिंग कार्य प्रारम्भ करें।
- नये क्षेत्र में वृक्षारोपण कराने हेतु मृदा कार्य पूर्ण कराया जाय।

वानिकी

- खुले क्षेत्रों में रखे पौध को वृक्षारोपण क्षेत्र में ले जाने अथवा बेचने की कार्यवाही करें।
- गड्ढा भरान यथाशीघ्र पूर्ण कर लें। वृक्षारोपण हेतु आवश्यक पौधे प्राप्त कर लें। पौधों के रोपण अथवा बिक्री हेतु ले जाने से पूर्व तक खुले क्षेत्र में सिंचाई करें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक 25 जून, 2015 को प्रातः 11:00 बजे आयोजित किया जाना प्रस्तावित है।

नोटः

- क्राप वेदर वाच ग्रुप की बैठकों की संस्तुतियॉ वेबसाईट **www.upcaronline.org** पर भी उपलब्ध है।
- क्राप वेदर वॉच ग्रुप की बैठकों की संस्तुतियॉ इफको किसान संचार लिमिटेड के द्वारा प्रदेश के 9 लाख कृषकों को वॉयस एस.एम.एस. के रूप में कृषकों को प्रेषित की जा रही हैं।
- आंचलिक मौसम केन्द्र, मौसम विभाग, अमौसी द्वारा मुफ्त टेलीफोन सेवा प्रारम्भ की गई है, जिसका नम्बर **18001801717** है। अतः कृषक मौसम सम्बन्धी जानकारी इस फोन नम्बर पर प्राप्त करें।